वात ही बात में, चले पिरमातमें 5554211 यह भी जी आई गजल वन गई आई 9 हसी लहरों से सूनी - कार दी भेंने अनसूनी 11211 देवी केन्या की आई - अनल जन गई "वात्री बात याद् मी की - - - - व्यात ही बात में -3 अड़ी दूर शी २वड़ी - मेरी हारी पड़ी ॥२॥ ऐसी इहमत् वषाई-गगल वन गई 'खातटीबात-ाद में की - - - - - वात ही बात में -3 उनसे बहुत दूर था - में तो मजबूर था गरा। दें में विस्तकी, दुराई - गमल वम गई "र" नात्रीबार याद में की ---- बात ही वात्में-® मेंने सी चा येहें खास-जारहाथा अने पास "२" पार भें की - - - - - नात ही बात में ----प्र इयाम वर्ण की थीं वी - नील वस्त्र में थीं वी ॥२॥ --- जात ही बात में--- हो बात है। चेत्री ने उसे अन्या तक्याई - अंजल क याद में की ---- ज्ञात ही बात में --इतनी दिल की सुभाई-गजस का गई गरा। सामरी जात - . वातरीवातमें-

दिनि दिलमें समाई – जाज स वन गई '। श मात्रीनात यद में की - - - - - - - - - - - - - - - व्यात ही बात में -नमीं आँखों ने पाई - गांजल जन गई "र" चात ही बीत --- वात्रही बात्रें-अ येवी तस्वीर है - मेरी लु हीर है ।।२॥ महिमा रवर में गाई - ग्रामल जान गई "शा जातही बात वाद भे की - - - - वात हाबातमः वाद है। यो वाबा श्री में का दार है। या कुद भी भी कह न पाई - जाजल वन गई "शा जातही बात-याद भी की - - - - - - नात ही बात में